बाइबल टीचर

वर्ष 19 | मई 2022 | अंक 6

सम्पादकीय

आपस में मिलना-जुलना न छोड़े

यहुदी लोग सबत के दिन अर्थात शनिवार को बहुत महत्व देते थे। परन्तु जब यीशु की क्रूस पर मृत्यु हुई तब सबत का दिन समाप्त हो गया और आज मसीहीयों के लिये उपासना का दिन है रविवार यानि सप्ताह का पहिला दिन। सबत का दिन कभी भी गैर-यहुदियों तथा मसीहियों को नहीं दिया गया था। (इफि. 2:13-22) आज मसीही लोग एक अच्छे और सिद्ध नियम के अधिकार से चलते हैं। सबत का दिन पुराने नियम के अनुसार था तथा पुराना नियम ऐसा नियम था जिसके द्वारा हमारे पापों की क्षमा हमें नहीं मिल सकती थी। (इब्रानियों 10:1-4, 7:18, 19, 9:9, 23) सबत का दिन प्रभु के दिन अर्थात सप्ताह के पहिले दिन की एक परछाई था। (कुलु 2:16, 17)। प्रभु के दिन के विषय में भविष्यवाणी की गई थी जब भजन के लिखने वाले ने इसके विषय में कहा था: "आज वह दिन है जो यहोवा ने बनाया है, हम इसमें मगन और आनन्दित हो।" (भजन 118:24)।

नये नियम की कलीसिया की एक विशेषता यह थी कि वह सप्ताह के पहिले दिन अर्थात संडे की अराधना को बहुत महत्व देती थी। आज पूरे संसार में जहां कहीं भी चर्च ऑफ क्राईस्ट की मण्डलियां हैं वे प्रभु भोज यानि रोटी तोड़ने को बहुत महत्व देते हैं। प्रभु भोज रीति-रिवाज़ों पर अधारित नहीं है बल्कि इसके द्वारा हम प्रभु की मृत्यु, को याद करते हैं। प्रत्येक सप्ताह के पहिले दिन कलीसियां के लोग एकत्रित होते थे। (1 कुरि. 16:1,2, प्रेरितों 20:7)। कहीं पर भी कोई मण्डली बहाना नहीं बनाती थी कि आज हमारा प्रीचर बीमार है या बाहर गया हुआ है इसलिये अराधना नहीं होगी या प्रभु भोज नहीं होगा। यह एक शर्मनाक बात है कि कई स्थानों पर मसीही लोग संडे के दिन अराधना के लिये नहीं जाते तथा उनकी दृष्टि में प्रभु भोज का कोई महत्व नहीं है। यूहन्ना प्रभु के दिन के विषय में इतना प्रसन्न होता था, कि एक बार उसने कहा कि, "मैं प्रभु के दिन आत्मा में आ गया"

(प्रकाशित 1:10) अर्थात सप्ताह का पहिला दिन ऐसा दिन है जिसके साथ कुछ विशेष घटनाएं जुड़ी हुई हैं। हमारा प्रभु सप्ताह के पहिले दिन मृतकों में से जी उठा था। (मरकुस 16:9)। अपने चेलों के सामने यीशु उसी दिन शाम को प्रगट हुआ था। (मरकुस 20:19, 20)। सप्ताह के पहिले दिन पहिला प्रवचन प्रेरित पतरस ने बोला था तथा उसी दिन तीन हजार लोगों ने बपतिस्मा लिया था तथा इसी दिन नये नियम की कलीसिया की स्थापना हुई थी (प्रेरितों 2 अध्याय)।

एक मसीही बनने के पश्चात हमारा यह कर्त्तव्य हो जाता हैं कि हम उपासना सभा में रेगुलर जायें तथा कभी भी प्रभु भोज मिस न करें। पहिली शताब्दी के मसीहियों के विषय में हम पढ़ते हैं कि वे "प्रेरितों से शिक्षा पानें, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे। (प्रेरितों 2:42)। इब्रानियों का लेखक कहता है, "और एक दूसरे के साथ इक्ट्ठा होना न छोड़ें, जैसे कि कितनों की रीति हैं, पर एक दूसरे को समझाते रहें, और ज्यों-ज्यों उस दिन को निकट आते देखो, त्यों-त्यों और भी अधिक यह किया करो। क्योंकि सच्चाई की पहिचान प्राप्त करने के बाद यदि हम जान बूझकर पाप करते हैं, तो पापों के लिये फिर कोई बलिदान बाकि नहीं। हां दण्ड का एक भयानक बाट, जोहना और आग का ज्वलन बाकी है जो विरोधियों को भस्म कर देगा। ...प्रभु अपने लोगों का न्याय करेगा। परमेश्वर का वचन कहता है, "जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है।" (इब्रानियों 10:24-31)।

जब हम अराधना में नहीं जाते तब हम परमेश्वर की कलीसिया को तुच्छ जानते हैं। (1 कुरि. 11:22)। कई मसीही लोगों के लिए यह दिन मौज मस्ती करने के लिये होता है, कई इस दिन अपने रिश्तेदारों को बुला लेते हैं तथा कुछ ऐसे हैं जिन्हें कुछ विशेष टी.वी. प्रोग्राम देखने से फुरसत नहीं मिलती अर्थात उनके जीवनों में यह दिन कोई विशेष महत्व नहीं रखता। इस विषय में पहिले से ही भविष्यवाणी की गई थी कि अन्तिम समय में ऐसे लोग होंगे जो भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर उसकी शक्ति को न मानेंगे।" (2 तीमु. 3:5)। और यह भी कहा गया था, "और अधर्म के बढ़ने से बहुतों का प्रेम ठण्डा हो जाएगा।" (मत्ती 24:12)। कोरोना के बाद बहुत सारे लोगों का प्रेम ठण्डा पड़ गया है। आनलाईन आराधना ने उनके प्रेम को ठण्ड़ा कर दिया है। बाइबल की शिक्षा है कि मसीहीयों को आपस में संगति करना नहीं छोड़ना है। (इब्रा. 10:25)। रविवार की आराधना में सब मसीहीयों को जाना चाहिये।

कई बार ऐसा भी देखा जाता है कि लोग जब शुरू में बपतिस्मा लेतें हैं तो प्रभु के प्रति उनके मन में बहुत प्रेम तथा जोश होता है। वे प्रत्येक एतवार को अराधना में आते हैं परन्तु धीरे-धीरे उनका प्रेम कम होने लगता है। जिस प्रकार से इफिसुस की कलीसिया को प्रभु ने कहा था वह आज यही बात मसीहियों से भी कहता है, "मुझे तेरे विरूद्ध यह कहना है कि तूने अपना पहिला सा प्रेम छोड़ दिया।" (प्रकाशित 2:4) जो मसीही प्रभु के प्रति अपने प्रेम में ठंडे पड़ गये हैं उनसे प्रभु कहता है जिस प्रकार से उसने लौदीकिया नामक स्थान पर मण्डली से कहा था, "कि मैं तेरे कामों को जानता हूं, कि तू न तो ठण्डा है और न गर्म, भला होता कि

तू ठण्डा या गर्म होता।" सो इसलिये कि तू गुनगुना है, और न ठण्डा है और न गर्म, मैं तुझे अपने मुंह से उगलने पर हूं" (प्रकाशित 3:16)। एक मसीही को आत्मिकता में आगे बढ़ना चाहिए। (2 पतरस 3:18)। मजबूत मसीही वे होते है जो लगातार बिना कोई बहाना बनाये कलीसिया की सभाओं में जाते हैं। उनके जीवनों में कलीसिया प्रथम होती है। (मत्ती 6:33) कमज़ोर मसीही वे होते हैं जो जरा सी छींक आने पर या थोड़ा सा सिर में दर्द होने पर अराधना में जाने से रूक जाते हैं। कई ऐसे होते हैं जिनके सिर में दर्द केवल संडे को ही होता है क्योंकि दूसरे दिन सोमवार को वे अपने काम पर चले जाते है। मुझे ऐसा लगता है कि हम आत्मिक बातों को इतना महत्व नहीं देते। हमारे अन्दर उस प्रकार की आत्मिक भूख नहीं होती जो होनी चाहिए। यीशु ने कहा था, "मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा"। (मत्ती 4:4)। यीशु ने इस बात को भी कहा था कि, "धन्य है वे जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किये जाएंगे" (मत्ती 5:6)। वास्तव में सब दिनों को परमेश्वर ने बनाया है। हम प्रतिदिन उसकी सेवा करते हैं, तथा उसकी स्तुति में भजन गाते हैं। परन्तु विशेष बात यह है कि उसने अपने लोगों को एक दिन दिया है अर्थात सप्ताह का पहिला दिन और इस दिन उसके लोग एक साथ इक्ट्ठे होकर उसकी अराधना करते हैं।

एक ही कलीसिया और एक ही शिक्षा

सनी डेविड

प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस के ऊपर अपना बलिदान देने से कुछ ही समय पूर्व अपने चेलों से प्रतिज्ञा करके कहा था कि मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा। प्रत्यक्ष ही है, यदि मसीह ने कहा था, जैसे की मत्ती 16:18 में हम पढ़ते हैं, कि मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा, तो कलीसिया कोई मामूली चीज नहीं हो सकती। बल्कि बाइबल में तो यह भी लिखा है, जैसे कि हम प्रेरितों 20:28 में पढ़ते हैं, कि मसीह ने अपनी कलीसिया के लिये अपना खून बहाया था। और इफिसियों 1:22, 23 में लिखा है कि कलीसिया मसीह की देह है। और कुलुस्सियों 1:18 में हम पढ़ते हैं कि मसीह कलीसिया का सिर है। सो इस तरह से हम देखते हैं, कि बाइबल में कलीसिया को एक बड़ा ही खास स्थान दिया गया है। परन्तु कलीसिया क्या है?

कलीसिया शब्द यूनानी भाषा का है, और यूनानी भाषा में कलीसिया का अर्थ है एक मंडली; यानि लोगों का एक झुंड, एक जमायत। अंग्रेजी में यूनानी भाषा के शब्द कलीसिया को चर्च कहा गया है। अकसर लोग यह गलती करते हैं; कि वे किसी बिल्डिंग, या भवन या इमारत को "चर्च" कहते हैं। पर चर्च या कलीसिया का वास्तविक अर्थ है "लोगों का झुंड।" यानि जब प्रभु यीशु मसीह ने कहा था, कि मैं

अपनी कलीसिया बनाऊंगा, तो प्रभु के कहने का अभिप्राय इस बात से था, कि वह अपनी एक मंडली या अपने लोगों का एक झुंड बनाएगा। वे लोग उसके विशेष लोग होंगे; वे उसके नाम से कहलाएंगे, और वे उसकी शिक्षाओं का और उसके आदर्शों का पालन करेंगे।

और जब प्रभु ने अपनी उस मंडली अर्थात अपनी कलीसिया को बनाया था, तो सबसे पहले उसमें उसके वे बारह चेले थे जिन्हें उसने आरम्भ में चुना था। और उन्हीं प्रथम चेलों ने जब उसके सुसमाचार को अन्य लोगों को सुनाना आरम्भ किया था, तो सबसे पहली बार लगभग तीन हजार लोगों ने मसीह के सुसमाचार को सुनकर; अर्थात यह सुनकर की मसीह जगत के पापों का प्रायश्चित करने को मारा गया था, और गाड़ा गया था, और फिर तीन दिन के बाद जी उठा था, मसीह में विश्वास किया था। और जब उन विश्वासियों ने यीशु के चेलों से पूछा था कि अब हम क्या करें? तो उन्होंने उन लोगों को जवाब देकर कहा था, जैसा कि हम प्रेरितों 2:38 में पढ़ते हैं, कि तुम में से हर एक अपना-अपना मन फिराए और अपने-अपने पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले, तो तुम पवित्रात्मा का दान अर्थात उद्धार पाओगे। और बाइबल में आगे लिखा है, कि जब उन लोगों ने ऐसा किया था, अर्थात अपना मन फिराकर अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लिया था, तो मसीह ने उनके पापों को क्षमा करके उन सब को अपनी कलीसिया में, अर्थात अपने अनुयायीयों की मंडली में मिला दिया था।

वह कलीसिया, अर्थात जिसकी स्थापना स्वयं मसीह ने आरम्भ में की थी, यानि मसीह की कलीसिया, आज भी वैसे ही वर्तमान है। और आज भी वह केवल उसी के नाम से कहलाती है, और उसी शिक्षा का पालन करती है जो आरम्भ में मसीह ने और उसके प्रेरितों ने दी थी।

मसीह ने अपनी कलीसिया की स्थापना आज से लगभग दो हजार वर्ष पूर्व की थी। और उस कलीसिया के बारे में हम आज भी बाइबल के नए नियम में पढ़ते हैं। और इसी के आधार पर, अर्थात बाइबल के नए नियम में लिखी बातों के आधार पर हम आज भी मसीह की सच्ची कलीसिया को पहचान सकते हैं।

पर इन दो हजार सालों के दौरान सैकड़ों अलग-अलग किस्म की और अलग-अलग नामों से कहलाई जाने वाली कलीसियाओं का आरम्भ भी सारे संसार में हुआ है। और वे इतनी अधिक सारे देशों में फैल गई हैं कि आज लोग अधिकांश रूप से मसीह की कलीसिया को तो लगभग भूल ही बैठे हैं, पर उन्हें विभिन्न प्रकार के नामों से कहलाई जाने वाली सभी कलीसियाएं ही सही लगती हैं। और जब इस बात की चर्चा होती है तो अकसर लोग कहते हैं, कि नाम से क्या फर्क पड़ता है? पर यदि यह सच है, तो फिर जो नाम हमारे राशन कार्ड पर लिखे हैं, या जो नाम हमारे प्रमाण पत्रों पर और जायदाद के कागजों पर लिखे हैं, तो उनका क्या महत्व है? बैंक से या डाकघर से जब हम अपने खाते से रुपये निकालते हैं तो अपने हस्ताक्षर करने के बजाए किसी का भी नाम लिख दें। क्या ऐसा हो सकता है? अभी कुछ समय से हम देख रहे हैं, कि हमारे देश में कुछ ऐसे लोग हैं जो पांच-पांच सौ रुपये के नकली नोटों को देश भर में फैला रहे हैं। अब ये नकली नोट बिल्कुल वैसे

ही लगते हैं जैसे की असली नोट हैं। और हजारों और लाखों लोग धोखे में आकर उन्हें ले भी लेते हैं। पर वे नकली नोट फिर भी नकली ही रहते हैं। और सरकार रेडियो और टेलीविजन और समाचार पत्रों के माध्यम से बार-बार लोगों को सावधान कर रही हैं; और लोगों को बताया जा रहा है कि किस तरह से वे असली और नकली नोटों के बीच अन्तर देख सकते हैं।

ऐसे ही बाइबल में भी हमें बताया गया है, कि जिस कलीसिया को आरम्भ में मसीह ने बनाया था, उसे हम किस प्रकार से पहचान सकते हैं। बाइबल से हम सीखते हैं, कि मसीह स्वयं अपनी कलीसिया का सिर है, और कलीसिया उसकी आत्मिक देह है, और उसकी कलीसिया में उसके सभी अनुयायी आपस में भाई और बहन है। वे व्यक्तिगत रूप से मसीही अर्थात मसीह के अनुयायी, और सामूहिक रूप से मसीह की कलीसिया कहलाते हैं। वे हर एक सप्ताह के पहले दिन यानि रविवार के दिन, जिस दिन मसीह मुर्दों में से जी उठा था, अलग-अलग स्थानों पर, एकत्रित होते हैं और मसीह की शिक्षानुसार प्रभु-भोज में भाग लेकर उसके महाबलिदान को स्मरण करते हैं और उसकी आराधना करते हैं। वे प्रतिदिन उसके आदर्शों का पालन करके अपना जीवन निर्वाह करने का प्रयत्न करते हैं। इसलिये, वे किसी भी प्रकार का कोई गंदा काम नहीं करते। वे किसी भी तरह का कोई नशा नहीं करते। वे लोगों से लड़ते-झगड़ते नहीं हैं, और गाली-गलौच नहीं करते। क्योंकि उनके जीवन का उद्देश्य स्वर्ग में प्रवेश करना हैं इसलिये मसीही, अर्थात मसीह की कलीसिया के लोग केवल उन्हीं बातों को मानते हैं जिनके विषय में प्रभु यीशु मसीह के नए नियम में सिखाया गया है। वे मनुष्यों की बनाई शिक्षाओं को, और मनुष्यों के ठहराए दिनों और त्योहारों को नहीं मानते। वे इस बात को बड़ी ही गंभीरता से लेते हैं, जैसा की मसीह ने सिखाया था, कि हर एक वह जो मुझ से हे प्रभु, कहता है, स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा, पर केवल वही प्रवेश करेंगे जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलते हैं। (मत्ती 7:21)।

मित्रो, हम सब का केवल एक ही परमेश्वर अर्थात स्वर्गीय पिता है, उस परमेश्वर पिता की हम सब के लिये एक ही इच्छा है, और अपनी उस इच्छा को उसने सारी मानवता के लिये अपनी पुस्तक बाइबल में प्रकट किया है। उसने सारी मानवता के पापों का प्रायश्चित करने के लिये केवल एक ही बलिदान दिया है। उसने अपने सामर्थी वचन को एक मनुष्य बनाकर यीशु मसीह के रूप में इस पृथ्वी पर भेजा था। वही आज हम सब का उद्धारकर्ता और मुक्तिदाता है। प्रत्येक स्थान पर जब लोग उसमें विश्वास करके उसकी आज्ञा को मानते हैं, तो वह उन सब को अपनी एक ही कलीसिया में, यानि उद्धार पाए हुए अपने लोगों के झुंड में मिलाता है।

हमारा कर्तव्य यह है, कि हम परमेश्वर की इच्छा को जाने और उसी की इच्छा पर चलकर अपने जीवनों को पृथ्वी पर व्यतीत करें। अपनी पुस्तक बाइबल में परमेश्वर ने अपनी इच्छा को हमें बताया है। और हमें उसकी इच्छा के विरूद्ध कोई काम नहीं करना चाहिए। क्योंकि, अन्त में, एक दिन, हमें उसी के न्यायासन के सामने खड़े होना पड़ेगा। (रोमियों 14:12)।

प्रार्थना

जे. सी. चोट

नए नियम की उपासना का एक और मुख्य नियम है प्रार्थना। जब आरंभ में मसीही लोग उपासना करने के लिए एकत्रित होते थे तो यह एक नियम था जिसका वे पालन करते थे। आरंभ में जब कलीसिया की स्थापना हुई थी, तो कलीसिया के सदस्यों के बारे में लिखा है, और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने और संगति रखने और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे। (प्रेरितों 2:42)। इस पर ध्यान दें, और प्रार्थना करने में, ऐसा उपासना के इस नियम पर बल देने के दृष्टिकोण से कहा गया है।

प्रार्थना शब्द का अर्थ है बिनती करना, ध्यान लगाना, निवेदन करना, या साधारण शब्दों में कहा जा सकता है प्रभु से बातें करना या बोलना। प्रार्थना न केवल हमारी उपासना सभाओं में ही सम्मिलित होनी चाहिए परन्तु हमारे प्रतिदिन के जीवन में भी इसका स्थान होना चाहिए। पौलुस लिखकर कहता है, और हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना और बिनती करते रहो, और इसी लिए जागते रहो, कि सब पवित्र लोगों के लिए लगातार बिनती किया करो। (इफिसियों 5:18)। फिर वह कहता है, निरंतर प्रार्थना में लगे रहो। (1 थिस्सलुनीकियों 5:17)। इसका प्रत्यक्ष अर्थ यह है कि मनुष्य का व्यवहार सदा प्रार्थनापूर्ण होना चाहिए।

जबकि अब हम इस महत्वपूर्ण विषय के ऊपर विचार करने जा रहे हैं, तो यहां हम कुछ विशेष बातों का वर्णन करेंगे–

1. प्रार्थना करने का विशेषाधिकार उनका है जो मसीही अर्थात परमेश्वर के संतान है।

इसका अर्थ यह नहीं है कि गैर मसीही लोग प्रार्थना नहीं कर सकते, या उन्हें प्रार्थना नहीं करनी चाहिए, परन्तु पवित्रशास्त्र में इस बात को स्पष्टता से बताया गया है कि प्रार्थना एक ऐसा अधिकार तथा ऐसी आशीष है जो उन्हें प्राप्त हैं जो मसीही है। एक स्थान पर हम इस प्रकार पढ़ते हैं, हम जानते हैं कि परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता परन्तु यदि कोई परमेश्वर का भक्त हो, और उसकी इच्छा पर चलता है तो वह उसकी सुनता है। (यूहन्ना 9:31)। अब इस बात पर ध्यान, दें कि प्रभु किस प्रकार के लोगों की प्रार्थना को सुनता है– वह जो परमेश्वर का भक्त है, और उसकी इच्छा पर चलता है। ऐसा मनुष्य कौन है? वह जो एक मसीही है। इसके अतिरिक्त एक पापी मनुष्य किस बात के लिये प्रार्थना कर सकता है? वह इस बात के लिये प्रार्थना नहीं कर सकता कि प्रभु उसके पापों को क्षमा कर दे, क्योंकि मसीह यीशु ने पहिले ही यह कहा है कि पाप से उद्धार पाने के लिये विश्वास लाकर बपतिस्मा लेना चाहिए। (मरकुस 16:16)। वह विश्वास प्राप्त करने के लिए प्रार्थना नहीं कर सकता, क्योंकि विश्वास उत्पन्न करने के लिये पवित्रशास्त्र को रचा गया है। (यूहन्ना 20:30, 31; रोमियों 10:17)। और न ही किसी और बात के लिये एक पापी मनुष्य प्रार्थना कर सकता है।

जब हम नए नियम में से उन सभी स्थानों पर से पढ़ते हैं जहां प्रार्थना के बारे में लिखा है तो हम देखते हैं कि उन सबका संबंध मसीही लोगों से ही है। एक मसीही परमेश्वर की संतान है, क्योंकि उसने परमेश्वर की आज्ञा को माना है। (गलतियों 3:26, 27)। और इसलिये वह सही अर्थ में परमेश्वर को अपना पिता कहकर सम्बोधित कर सकता है। (रोमियों 8:15)। यदि सभी लोग, पापी तथा पवित्र, प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर पिता के पास पहुंच सकते हैं, तो फिर एक मसीही व्यक्ति में, जो पाप से मुक्त हो चुका है, और एक पापी में क्या अंतर रह जाएगा? सो आप स्पष्टता से देख सकते हैं कि प्रार्थना करना एक मसीही व्यक्ति का विशेषाधिकार है, और उन अनेक आत्मिक आशीषों में से एक आशीष है जो एक मसीही को प्राप्त है। (इफिसियों 1:3)।

आज एक बड़ी ही प्रचलित शिक्षा यह दी जा रही है कि एक पापी प्रार्थना करके अपने पापों की क्षमा प्राप्त कर सकता है और इस प्रकार एक मसीही बन सकता है। परन्तु परमेश्वर के बचन में हमें ऐसी शिक्षा नहीं मिलती, यह मनुष्यों की शिक्षा है।

2. हमें अपनी प्रार्थनाओं को परमेश्वर के सम्मुख यीशु मसीह के द्वारा प्रस्तुत करना चाहिए।

परमेश्वर पिता है, और वही सब प्रकार की आशीषों को देने वाला है। इसलिये यह उचित है कि हम उससे सहायता मांगे तथा उन सब आशीषों के लिये उसे धन्यवाद दें जो उसकी ओर से हमें मिली हैं। किन्तु हम परमेश्वर के पास सीधे नहीं जा सकते, क्योंकि परमेश्वर तथा मनुष्य के बीच में पाप आ चुका है। लेकिन इस का अर्थ यह भी नहीं है कि हम किसी मनुष्य के द्वारा चाहे वह कोई भी क्यों न हो, अपनी प्रार्थनाओं को उनके पास पहुंचाने का प्रयत्न करें। इसके विपरीत यीशु हमारा मेल है, वह हमारा बिचवई तथा हमारा सहायक है जिस के द्वारा हमें परमेश्वर के अनुग्रह के सिंहासन तक पहुंचना चाहिए। सुनिए, कि परमेश्वर का वचन क्या कहता है, हे मेरे बालको, मैं ये बातें तुम्हें इसलिए लिखता हूं कि तुम पाप न करो; और यदि कोई पाप करे तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात धार्मिक यीशु मसीह। और वही हमारे पापों का प्रायश्चित है, और केवल हमारे ही नहीं वरन सारे जगत के पापों का भी। (1 यूहन्ना 2:1, 2) फिर लिखा है, क्योंकि परमेश्वर एक ही है। और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में एक ही बिचवई है, अर्थात मसीह यीशु जो मनुष्य है। (1 तीमुथियुस 2:5)। इस कारण हमें सदा यीशु मसीह के नाम से, या उसके अधिकार से, प्रार्थना करनी चाहिए। (मत्ती 28:18)।

3. हमें आत्मा तथा सच्चाई के साथ प्रार्थना करनी चाहिए।

अपने पिछले पाठों में हम इस बात को देख चुके हैं कि प्रभु यीशु ने कहा है, कि हमें परमेश्वर की उपासना आत्मा और सच्चाई के साथ करनी चाहिए। (यूहन्ना 4:24)। क्योंकि प्रार्थना उपासना प्रति-दिन के मसीही जीवन का एक भाग है, इसलिए हमारी प्रार्थना आत्मा और सच्चाई के साथ होनी चाहिए। 1 कुरिन्थियों की पत्री में पौलुस लिखकर कहता है, इसलिये यदि मैं अन्य भाषा से प्रार्थना करूं, तो मेरी आत्मा प्रार्थना करती है, परन्तु मेरी बुद्धि काम नहीं देती। सो क्या करना चाहिए?

मैं आत्मा से भी प्रार्थना करूंगा, और बुद्धि से भी प्रार्थना करूंगा, मैं आत्मा से गाऊंगा और बुद्धि से भी गाऊंगा। (1 कुरिन्थियों 14:14, 15)। सो इसका तात्पर्य यह हुआ कि हमें समझ के साथ प्रार्थना करनी चाहिए, अर्थात प्रार्थना में जो हम कह रहे हैं वह हमारे मन से हो और नम्रता से हो तथा ईमानदारी के साथ हो। फिर, हमारी प्रार्थना को पवित्रशास्त्र की शिक्षानुसार होना चाहिए। यानि प्रार्थना में हमें प्रभु से कोई ऐसी वस्तु नहीं मांगनी चाहिए जो उसकी इच्छा के विरूद्ध है। एक बार मसीह ने जब उसके चेलों ने उससे एक मूर्खतापूर्ण निवेदन किया था, कहा था, तुम नहीं जानते कि क्या मांगते हो? जो कटोरा मैं पीने पर हूं, क्या तुम पी सकते हो? (मत्ती 20:22)। एक अन्य स्थान पर प्रभु ने कहा था, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर। (मत्ती 4:7)।

यही कारण है कि प्राय: प्रभु की प्रार्थना (मत्ती 6:9-13), कहीं जाने वाली प्रार्थना को हम आज वैसे ही नहीं दोहरा सकते। क्योंकि यदि आज हम उसके राज्य आने के लिए प्रार्थना करते हैं तो यह प्रभु की इच्छानुसार नहीं होगा, क्योंकि राज्य तो अब आ चुका है। (इब्रानियों 12:28)।

4. हमें जो प्रार्थना में मांगना चाहिए उसके विषय में पवित्र शास्त्र हमें स्पष्टता से बताता है।

हमें धन्यवाद देने के लिये प्रार्थना करनी चाहिए। किसी भी बात की चिंता मत करो, परन्तु हर एक बात से तुम्हारे निवेदन प्रार्थना और बिनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएं। (फिलिप्पियों 4:6)।

5. हमें आवश्यकता के समय प्रार्थना करनी चाहिए। सो बन्दीग्रह में पतरस की रखवाली हो रही थी; परन्तु कलीसिया उसके लिए लगाकर परमेश्वर से प्रार्थना कर रही थी। (प्रेरितों 12:5)।

हमें अपने देश के अधिकारियों या हाकिमों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। (रोमियों 13)।

हमें एक दूसरे के लिये प्रार्थना करनी चाहिए। इसलिये तुम आपस में एक दूसरे के सामने अपने-अपने पापों को मान लो, और एक दूसरे के लिये प्रार्थना करो, जिससे चंगे हो जाओ, धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है। (याकूब 5:16)।

हमें रोगियों के लिये प्रार्थना करनी चाहिए। यदि तुम से कोई रोगी हो, तो कलीसिया के प्राचीनों को बुलाए, और वे प्रभु के नाम से उस पर तेल मलकर उसके लिये प्रार्थना करे और विश्वास की प्रार्थना के द्वारा रोगी बच जाएगा और प्रभु उसको उठाकर खड़ा करेगा; और यदि उसने पाप भी किए हों तो उनकी भी क्षमा मिल जाएगी। (याकूब 5:14, 15)।

ऐसे ही पवित्र शास्त्र के अनेक अन्य पदों की भी हम देख सकते हैं जिनसे हम वह सीखते हैं कि हमें किन वस्तुओं तथा किन लोगों के लिये प्रार्थना करनी चाहिए। जिनमें कलीसिया, हमारे परिवार, जगत में पाप के भीतर खोए हुए लोग, इत्यादि सम्मिलित है।

6. पवित्रशास्त्र में कुछ प्रार्थनाओं का भी वर्णन हमें मिलता है।

प्रभु यीशु मसीह ने सिखाया था, और जब तू प्रार्थना करें, तो कपटियों के समान नहीं क्योंकि लोगों को दिखाने के लिये सभाओं में और सड़कों की मोड़ों पर खड़े होकर प्रार्थना करना उनकी अच्छा लगता है, मैं तुम से सच कहता हूं कि वे अपना प्रतिफल पा चुके। परन्तु जब तू प्रार्थना करे, तो अपनी कोठरी में जा; और द्वार बंद करके अपने पिता से जो गुप्त में है प्रार्थना कर, और तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा। प्रार्थना करते समय अन्य जातियों की नाई बक-बक न करो; क्योंकि वे समझते हैं कि उनके बहुत बोलने से उनकी सुनी जाएगी। सो तुम उनकी नाई न बनो, क्योंकि तुम्हारा पिता तुम्हारे मांगने से पहले ही जानता है, कि तुम्हारी क्या-क्या आवश्यकता है। (मत्ती 6:58)। फिर उसने चिताकर कहा, इसलिए यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा। और यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा। (मत्ती 6:14, 15)।

सो इन सब बातों से यह निष्कर्ष निकलता है, कि प्रार्थना के महत्व को चाहे हम उपासना सभा में देखें या चाहे प्रति-दिन के जीवन में यह एक बहुत बड़ा विषय है। किन्तु मसीही होने के कारण दोनों ही स्थिति में हमें यह अधिकार है कि हम अपने निवेदनों की परमेश्वर के सम्मुख प्रस्तुत करें। और केवल यही नहीं, परन्तु प्रभु हम से ऐसी ही आशा भी रखता है। अब जहां तक उपासना का संबंध है, मसीही लोग अपनी प्रार्थना करने के लिए उसी प्रकार अपने घर में नहीं रूक सकते जिस प्रकार से कि वे अपना चंदा देने के लिए या प्रभु भोज में भाग लेने के लिये अपने-अपने घरों में नहीं रूक सकते। जो मसीही उपासना करने के लिए एकत्रित होंगे वे अपने घरों में भी प्रार्थना करेंगे। परन्तु जो लोग उपासना के लिये अन्य मसीही लोगों के साथ एकत्रित नहीं होंगे वे अपने घरों में भी प्रार्थना नहीं करेंगे। और यदि वे ऐसा करेंगे भी तो उससे कुछ लाभ न होगा जब तक कि वे प्रभु के प्रति विश्वासी होना न सीख लेंगे।

विश्वास के साथ प्रार्थना करना आवश्यक है। मांगों तो तुम्हें दिया जाएगा, प्रभु यीशु ने कहा था। प्रार्थना में शक्ति है।

स्वेच्छा

जोएल स्टीफ़न विलियम्स

उद्धार परमेश्वर का वरदान है और उसके अनुग्रह से ही मिलता है, पर शर्त-युक्त है। सुसमाचार को सुनना ही पर्याप्त नहीं है, पर विश्वास लाना भी ज़रूरी है। परमेश्वर क्षमा करने को तैयार है किंतु मनुष्य को पाप से मन फिराना ज़रूरी है। परमेश्वर दयावान है, पर हमें उसकी आज्ञापालन करना ज़रूरी है। यीशु ने अपने बलिदान के द्वारा मनुष्य के पापों का प्रायश्चित कर दिया है, पर इसका लाभ उन्हीं लोगों को प्राप्त होता है जो परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं। बाइबल में हमें दो मार्गों के बारे में बताया गया है, अर्थात

एक जीवन का मार्ग है और दूसरा मार्ग है मृत्यु का (व्यवस्था- विवरण 30:15; प्रेरितों 2:40)। हमें स्वयं निश्चय करना है, कि कौन से मार्ग पर हम चलना चाहते हैं। यीशु को हम मान सकते हैं, या उसे नहीं मानने का निश्चय भी हम कर सकते हैं। (यूहन्ना 14:6; मत्ती 11:28-30)। परमेश्वर ने हमें बताया है कि अच्छाई क्या है और सही काम करने का फल क्या है। और उसने हमें यह भी बताया है कि बुराई क्या है और उसका फल क्या है। किन्तु परमेश्वर किसी को भी अच्छाई या बुराई करने के लिये विवश नहीं करता।

परमेश्वर की आज्ञा है कि हम विश्वास लाएं, मन-फिराएं और उसकी आज्ञा मानें, किन्तु यह हमारी इच्छा है कि हम उसकी बात मानें या न मानें। कुछ लोगों की यह भी गलत धारणा है, कि कोई भी मनुष्य उद्धार पाने के लिए स्वयं कुछ नहीं कर सकता क्योंकि परमेश्वर ने पहले ही से यह ठहराया हुआ है कि कौन उसके पास आएगा और कौन नहीं आएगा। अर्थात् कौन उद्धार पाएगा और कौन नहीं पाएगा यह परमेश्वर ने पहले से ही निश्चित करके रखा हुआ है, इसीलिए इस विषय में मनुष्य कुछ भी नहीं कर सकता, ऐसा कुछ लोगों का मानना है। किन्तु ऐसी सोच गलत है। क्योंकि जो लोग अपने पाप का दण्ड पाएंगे, वे इसलिए पाएंगे क्योंकि उन्होंने अपना मन न फिराकर परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानी है। बड़ी ही स्पष्टता से बाइबल हमें बताती है कि मनुष्य स्वयं अपनी मर्ज़ी से अच्छाई और बुराई को चुन सकता है। (याकूब 4:17; यूहन्ना 7:17; प्रेरितों 13:46)। परमेश्वर मनुष्य को अपने पास आने को कहता है ताकि मनुष्य उसकी आज्ञाओं पर चलकर अपने पापों से उद्धार पा ले और स्वर्ग में हमेशा की ज़िन्दगी पाए। (1 थिस्सलुनीकियों 2:12; 1 तिमुथियुस 6:12; इब्रानियों 9:15; 1 पतरस 2:9)। सुसमाचार के प्रचार के द्वारा परमेश्वर आज भी लोगों को अपने पास बुला रहा है। (2 थिस्सलुनीकियों 2:14)। मनुष्य चाहे तो अपना मन-फिराकर हृदय-परिवर्तन के साथ उसके पास कभी भी आ सकता है।

परमेश्वर ने किसी भी व्यक्ति के लिये पहले से निश्चित या निर्धारित करके नहीं रखा हुआ है, कि कौन सा व्यक्ति अपना मन फिराकर और विश्वास करके उसके पास आएगा, और कौन उसके पास नहीं आएगा। यह सही है कि परमेश्वर सर्वज्ञानी है, और उसने कुछ बातों को पहले ही से सुनिश्चित करके ठहराया हुआ है। परमेश्वर को यह पहले ही से ज्ञात था कि मसीह पृथ्वी पर जगत के लोगों का पाप से उद्धार करने के लिए आएगा। (प्रेरितों 2:23; 1 पतरस 1:18-20)। बाइबल में हम परमेश्वर की पहले से ठहराई हुई मनसा के बारे में भी पढ़ते हैं। पर इसका तात्पर्य इस बात से नहीं है कि कौन-कौन से लोग उद्धार पाएंगे और कौन नहीं पाएंगे। व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर ने प्रत्येक को उद्धार पाने के लिये नहीं चुना है, पर सामूहिक रूप से उसने दो प्रकार के लोगों को चुना है। अर्थात् वे जो उसकी इच्छा को मानकर और उस पर चलकर परमेश्वर के पास आएंगे, और इस प्रकार मुक्ति या उद्धार प्राप्त करके उसके स्वर्ग में प्रवेश करेंगे, और दूसरे वे हैं जो परमेश्वर की इच्छा को न मानकर हमेशा उससे दूर रहेंगे। (रोमियों 8:28-30; इफिसियों 1:4-5, 11; 2 थिस्सलुनिकियों 2:13; 1 पतरस 1:2-3)।

ऐसा सोचना कि परमेश्वर ने स्वयं ही यह पहले से सुनिश्चित कर लिया है कि कौन सा व्यक्ति स्वर्ग में जाएगा और कौन सा नहीं जाएगा, मनुष्य को चुनाव करने का अवसर दिए बिना, गलत धारणा है। यह ऐसे ही होगा जैसे कि कोई शिक्षक अपने विद्यार्थियों को

बिना परीक्षा लिए ऐसे ही पास और फेल कर दे। परन्तु यह दूसरी बात है कि यदि शिक्षक यह पहले से सुनिश्चित कर ले कि जो विद्यार्थी 90 से 100 प्रतिशत नम्बर लाएंगे वे पहला दर्जा पाएंगे और जो 80 से 89 प्रतिशत लाएंगे वे दूसरा दर्जा पाएंगे। इस बात में चुनाव दोनों तरफ से है। ऐसे ही परमेश्वर ने भी अपनी इच्छा को मनुष्यों पर प्रकट किया है, इस निश्चय के साथ कि जो लोग उस की इच्छा को मानेंगे वे उद्धार पाएंगे परन्तु जो लोग उसकी इच्छा को नहीं मानेंगे वे उद्धार नहीं पाएंगे। मानना और नहीं मानना स्वयं मनुष्य को ही यह निश्चय करना है। चुनाव करने का निश्चय परमेश्वर ने स्वयं मनुष्य को ही दिया है।

परमेश्वर की सर्वशक्तिशालिता और भलाई

फ्रेंक पैक

परमेश्वर की सर्वशक्तिशालीता और मनुष्य के लिए उसके महान प्रेम के नये मूल्यांकन से हमारे मनों में पाई जाने वाली कई भ्रांतियां दूर हो सकती है। परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है (मत्ती 19:26)। यह कहकर बाइबल क्या समझाना चाहती है? क्या इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर वह गांठ बांध सकता है जिसे वह स्वयं खोल नहीं सकता? क्या परमेश्वर एक वर्गाकार घेरा बना सकता है? ऐसे प्रश्न पूछकर मनुष्य स्वयं शब्दों से खेल रहे हैं। यह तथ्य कि हम शब्दों को इस प्रकार इकट्ठे कर सकते हैं, का यह अर्थ नहीं है कि उनका कुछ भी अर्थ निकाल लिया जाए। दो पारस्परिक वशिष्ठ बातें नहीं की जा सकती, वरना परमेश्वर का संसार एक विसंगति बन जाएगा। सर्वशक्तिशालिता का अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर किसी के मन में आने वाली मूर्खता कर सकता है। इसके विपरीत, इसे उसके स्वभाव के अन्य गुणों के संबंध में पूरी तरह से उनके साथ मिलाकर समझना चाहिए। परमेश्वर सर्व-सामर्थी है जो अपने स्वभाव और अपनी इच्छा के अनुरूप सब कुछ कर सकता है। बाइबल ही कहती है कि कुछ काम ऐसे हैं जिन्हें परमेश्वर नहीं कर सकता क्योंकि वह परमेश्वर है। परमेश्वर झूठ नहीं बोल सकता (इब्रानियों 6:18), वह बुराई से किसी की परीक्षा नहीं ले सकता और न ही परीक्षा में पड़ सकता है (याकूब 1:13), और वह बुराई को देखकर चुप नहीं रह सकता (हबक्कूक 1:13)। ऐसा करके तो वह अपने ही स्वभाव का विरोध करेगा।

सर्वशक्तिशाली परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी पसंद चुनने की शक्ति देकर, अपने जीवन में निर्णय लेने की स्वतंत्र इच्छा के साथ बनाया था। परमेश्वर ने मनुष्य को स्वतंत्रता की इच्छा प्रदान कर अपनी ही इच्छा को सीमित किया है। परन्तु मनुष्य को संसार में अपनी मर्जी का मालिक बनाकर परमेश्वर ने स्वेच्छा से अपने आपको सीमित करके अपने सर्वशक्तिशाली होने को किसी भी प्रकार खतरे में नहीं डाला है। इस सीमा में, जो परमेश्वर ने स्वयं ही अपने ऊपर लगाई है कोई बाहरी शक्ति शामिल नहीं है, बल्कि इसे उसके ही स्वभाव से लिया गया है।

यदि कोई कहे कि जब उसे यह पता था कि इससे मनुष्य गलत पसंद को चुनकर कष्ट में पड़ेगा तो परमेश्वर ने मनुष्य को स्वतंत्र इच्छा देकर क्यों बनाया, तो इसका केवल

एक ही उत्तर हो सकता है, अपनी असीम बुद्धि और प्रेम के कारण परमेश्वर उसमें होने वाला जोखिम लेने को तैयार था ताकि वह हमारे साथ व्यक्तियों के रूप में व्यवहार कर सके और हमें अपनी इच्छा से उसकी सेवा करने या उसे ठुकराने की स्वतंत्रता दे सके। उसने यह जोखिम हमें नैतिक और आत्मिक रूप में अपने जैसा बनाने के लिए उठाया। परमेश्वर लोगों के साथ मनवीय जीवों के मनों और इच्छाओं के पास बिनती करते हुए उन्हें जबरदस्ती नहीं बल्कि समझाकर काम करता है। इसलिए, संसार में पाई जाने वाली बहुत सी बुराइयां उन लोगों की बुरी इच्छाओं के कारण आती है जिन्होंने परमेश्वर के मार्ग को ठुकरा दिया है। यदि इच्छा की स्वतंत्रता का कोई अर्थ है तो फिर परमेश्वर भी किसी के जीवन में प्रवेश करके उसे उसकी इच्छा के विरूद्ध उसके पीछे चलने को केवल इसलिए मजबूर नहीं कर सकता कि वह ऐसा चाहता है। निर्णय लेना प्रत्येक व्यक्ति के अपने हाथ में है। परमेश्वर की सर्वशक्तिशालीता की कोई भी अवधारणा जो मनुष्य की पसंद की स्वतंत्रता और उसके कामों और निर्णयों के लिए उसकी नैतिक जिम्मेदारी को खत्म करती हो, परमेश्वर के वचन की शिक्षा के अनुसार नहीं हो सकती।

हम परमेश्वर को प्रेम कहते हैं, इसलिए लोग अक्सर परमेश्वर को किसी प्रकार के सांता क्लॉज या दादा के रूप में चित्रित करते हैं। उनका मानना है कि उसकी मुख्य दिलचस्पी यह देखने में है कि उसके बनाए लोगों के पास वह सब होना चाहिए जिसकी वे इच्छा करते हैं और पृथ्वी पर उन्हें पूरी तरह से आनन्द करना चाहिए। प्रेम की यह कैसी विकृत धारणा है। जब जीवन के अनुभव इस स्वप्न को छिन्न-भिन्न कर देते हैं, तो बहुत से लोग कहते हैं, मैं ऐसे परमेश्वर पर विश्वास नहीं कर सकता जो मुझे वह सब कुछ नहीं देता जो मैं मांगता हूं (या जो मुझे लगता है कि मेरे लिए अच्छा है)। सावधानीपूर्वक अध्ययन करने के बाद, मसीही व्यक्ति इस बात से अवगत है कि अपने लोगों के लिए परमेश्वर के प्रेम का वर्णन करने के लिए बाइबल में इस्तेमाल किए गए संकेत और एक रूपताएं परमेश्वर पिता को कभी भी दादा के रूप में नहीं दिखाते।

परमेश्वर को एक कुम्हार के रूप में दिखाया गया है जो मिट्टी के बर्तन बनाने में बड़ी सावधानी से और चौकस होकर काम करता है। वह एक भवन निर्माता की तरह है जो निपुणता से एक सुन्दर मंदिर को खड़ा करने के लिए पत्थरों को आकार देता है और उन्हें चुन-चुन कर लगाता है ताकि वह उसकी एक सर्वोत्तम रचना बन जाए। वह एक चरवाहे की तरह है जो अपने झुण्ड की रक्षा करने और उसे खतरे से बचाने के लिए समर्पित है, एक पिता जो अपने बच्चों को जिनमें उनकी खुशी हैं अनुशासित करता और सुझाव देता है। उस प्रेम के कारण हम पर कष्ट लाता है क्योंकि उसकी पवित्र आंख हमारे अन्दर इतनी बुराई देखती है जो उसकी पवित्रता को भंग और उसका प्रतिरोध करती है। परमेश्वर को हमें और प्रिय व्यक्ति बनाने के लिए अपने शुद्ध और पवित्र स्वभाव जैसा बनाने के लिए हमारे साथ मिलकर काम करना है। निर्बलता पर हमारी विजयों से वह प्रसन्न हो सकता है, परन्तु जब तक उसे हम में वह सब दिखाई देता है जो उतना अच्छा नहीं है जितना होना चाहिए तब तक वह हमसे संतुष्ट नहीं होता है। वह हमें अनुशासित करता है, सिखाता है और तैयार करता है ताकि हम अनन्तकाल का समय उसके साथ बिता सके। उसके अनुशासन में रहे बिना परमेश्वर के प्रेम की कोई भी अवधारणा पूरी नहीं होती है। वह जो संभाल हमारी करता है वह इस बात पर जोर देती है कि वह हमसे

कितना प्रेम करता है और उसे हमारी इतनी चिंता है कि वह चाहता है कि हम उसके प्रिय पुत्र, हमारे उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के जैसे बन जाएं।

खोजे का मन परिवर्तन

जॉन स्टेसी

अपने पुनरुत्थान के बाद स्वर्ग में वापस उठा लिये जाने से पहले प्रभु यीशु ने एक विशाल आज्ञा देकर अपने चेलों से कहा था, कि वे सब लोगों को जाकर बताएं कि उन्हें मसीही बनने के लिये क्या करना जरूरी है। इस विशाल आज्ञा के बारे में हमें मत्ती 28:18-20 मरकुस 16:15, 16 तथा लूका 24:46 में मिलता है। मत्ती के अनुसार प्रभु ने कहा था, कि लोगों को बपतिस्मा दो और उन्हें सिखाओं। मरकुस के अनुसार उद्धार पाने के लिये सबको विश्वास करना और बपतिस्मा लेना आवश्यक है। और लूका के अनुसार मन फिराव और पापों की क्षमा का प्रचार एक साथ किया जाएगा।

इन सब बातों को एक जगह पर देखने के लिये हम बाइबल में वर्णित मन-परिवर्तन की एक घटना पर विचार करेंगे। यह घटना हम सबके लिये एक उदाहरण है जिससे हमें शिक्षा मिलती है कि एक मसीही बनने के लिये मनुष्य को क्या-क्या करने की आवश्यकता है। परमेश्वर जानता है कि एक उदाहरण में शक्ति होती है और इसीलिये उसने हमें बाइबल में प्रेरितों के काम नाम की पुस्तक दी है जिसमें हमें मसीही बनने के संबंध में दस उदाहरण मिलते हैं। किन्तु इस समय हम प्रेरितों 8:26-29 से खोजे के उदाहरण पर विचार करेंगे। सबसे पहिले इस घटना में हम एक स्वर्गदूत के बारे में पढ़ते हैं। प्रेरितों 8:26 में लिखा है कि, फिर प्रभु के एक स्वर्गदूत ने फिलिप्पुस से कहा उठकर दक्खिन की ओर उस मार्ग पर जा, जो यरुशलेम से अज्जाह को जाता है, और जंगल में है।

अब स्वर्गदूत स्वयं क्यों नहीं खोजे के पास गया? यह घटना उस समय घटी थी जबकि आश्चर्यक्रम किए जाते थे। पर इस मनुष्य का उद्धार आश्चर्यकर्म के द्वारा नहीं हुआ था। उस स्वर्गदूत ने केवल फिलिप्पुस से बात की थी और केवल इसलिये कि वह फिलिप्पुस को खोजे के पास ले आए।

परमेश्वर अपने सुसमाचार को मनुष्यों के द्वारा लोगों तक पहुंचाना चाहता है। 1 कुरिन्थियों 1:21 के अनुसार, परमेश्वर को यह अच्छा लगा कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करने वालों को उद्धार दे। आज सुसमाचार के प्रचार के द्वारा परमेश्वर लोगों का उद्धार करता है न कि किसी आश्चर्यकर्म या चिन्ह के द्वारा। आरंभ में किए गए आश्चर्यकर्मों का उद्देश्य मरकुस 16:20 में लिखे इस वर्णन से स्पष्ट हो जाता है।

और प्रभु उनके साथ काम करता रहा और उन चिन्हों के द्वारा जो साथ-साथ होते थे, वचन को दृढ़ करता रहा। पौलुस ने 2 कुरिन्थियों 5:7 में कहा था, क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं पर विश्वास से चलते हैं। दूसरे, खोजे की घटना में पवित्रात्मा के काम पर ध्यान करके हम देखते हैं, कि आत्मा ने केवल फिलिप्पुस को खोजे के पास तक जाने में सहायता दी, उसने खोजे से बात नहीं की। प्रेरितों 8:28 में लिखा है, तब

आत्मा ने फिलिप्पुस से कहा, निकट जाकर इस रथ के साथ हो ले। आत्मा ने केवल इतना ही काम किया था कि उसने फिलिप्पुस और खोजे को एक जगह पर मिला दिया था। आत्मा ने फिलिप्पुस को यह नहीं बताया कि उसे क्या कहना है। उसने यह बात फिलिप्पुस पर ही छोड़ दी थी।

अब इसमें कोई दो राय नहीं है, कि पवित्र आत्मा मनुष्य के उद्धार के कार्य में अवश्य काम करता है। यीशु ने यूहन्ना 3:5 में कहा था कि जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्में तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। परन्तु प्रश्न यह है कि पवित्रात्मा किस प्रकार मनुष्य के उद्धार में काम करता है? इस प्रश्न का उत्तर हमें खोजे के उद्धार की घटना में स्पष्ट रूप में मिलता है। आत्मा वचन के प्रचार के द्वारा अपना काम करता है। याकूब 1:21 में लेखक कहता है कि उस वचन को नम्रता से ग्रहण कर लो, जो हृदय में बोया गया और जो तुम्हारे प्राणों का उद्धार कर सकता है। तीसरे स्थान पर इस बात पर ध्यान करके देखें कि खोजे के उद्धार की घटना में प्रचारक ने कया किया था। प्रेरितों 8:35 के अनुसार तब फिलिप्पुस ने अपना मुंह खोला और इसी शास्त्र से आरंभ करके उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया। फिलिप्पुस ने उसे कहानियां किस्से नहीं सुनाएं और राजनीति की बात नहीं की, उसने उसे कोई और सुसमाचार या मनुष्यों के उपदेश नहीं सुनाए पर उस ने खोजे को मसीह का सुसमाचार सुनाया। उसके उपदेश का विषय यीशु मसीह था।

प्रेरितों 8:12 से हम कुछ ऐसी बातों को देखते हैं जिनका उल्लेख यीशु के प्रचार में शामिल है। अब चौथी बात इस पाठ में हमें यह मिलती है, कि खोजे ने अपने पापों से उद्धार पाकर एक मसीही बनने के लिये क्या किया था। सबसे पहले 35 पद के अनुसार उसने यीशु का सुसमाचार सुना था। रोमियों 10:17 में पौलुस ने कहा था, कि विश्वास सुनने से, और सुनना परमेश्वर के वचन से होता है। दूसरे उसने एक सवाल पूछा था, 36 पद में लिखा है कि उसने कहा था, देख यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है? लिखा है कि फिलिप्पुस ने कहा, यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है उसने उत्तर दिया, मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। फिर यद्यपि यहां यह लिखा नहीं गया है कि खोजे को मन फिराने को कहा गया था, परन्तु यह प्रत्यक्ष ही है कि उसने निश्चय ही अपना मन फिराया था। उसके जीवन में एक परिवर्तन आया था उसने अब विश्वास किया था कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है और वह अब उसकी आज्ञा मानकर बपतिस्मा लेना चाहता था। उसका मन अब बदल गया था। पौलुस ने प्रेरितों 17:30 में कहा था कि परमेश्वर अज्ञानता के समयों से अनाकानी करके अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। और ऐसा ही खोजे ने भी किया था। और जैसा कि रोमियों 10:10 तथा मत्ती 10:32-33 और 1 तीमुथियुस 6:12 में हम पढ़ते हैं, खोजे ने मसीह को परमेश्वर का पुत्र मानकर उसका अंगीकार किया था। और लिखा है, तब उसने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े, और उसने उसे बपतिस्मा दिया। (प्रेरितों 8:38)। जैसे ही वे पानी की जगह आए, खोजे ने तुरन्त बपतिस्मा लिया।

किन्तु क्यों? यदि बपतिस्मा लेना उद्धार पाने के लिये आवश्यक नहीं है, जैसे कि

कुछ लोगों का मत है, तो फिर खोजे ने बपतिस्मा लेने में इतनी जल्दी क्यों की? क्योंकि प्रभु यीशु ने मरकुस 16:16 में यूं कहा था, जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, "ऐसे ही प्रेरितों 16:33 में हम जेल के एक दारोगा के बारे में यूं पढ़ते हैं, और रात को उसी घड़ी उसने उन्हें ले जाकर उनके घाव धोए और उसने अपने सब लोगों समेत तुरन्त बपतिस्मा लिया। पर यदि बपतिस्मा उद्धार के लिये आवश्यक नहीं है, तो फिर इतनी जल्दी किस लिये? और खोजे के संबंध में प्रेरितों 8:39 में, अंत में हम यूं पढ़ते हैं कि वह आनन्द करता हुआ अपने मार्ग चला गया। यानि बपतिस्मा लेकर जल में से बाहर निकल आने के बाद। मन परिवर्तन तथा मसीही बनने की इस घटना के बारे में लूका ने पवित्रात्मा की प्रेरणा के द्वारा बाइबल में लिखा था। क्या आप एक मसीही हैं? क्या आप इसी प्रकार से एक मसीही बने थे?

पौलुस का मसीही बनना

पौलुस जब एक मसीही बना था तो उसका एक वर्णन हमें प्रेरितों 22:1-16 में मिलता है। उसी विवरण को ध्यान में रखकर हम इस संबंध में यहां कुछ बातों को देखने जा रहे हैं। कुछ ऐसी खास बातें हैं जिन्हें हम इस पाठ से सीख सकते हैं। सबसे पहली बात इस विवरण से हम यह सीखते हैं कि आत्मिक बातों से संबंधित धार्मिक निर्णय एक व्यक्तिगत निर्णय होना चाहिए। पौलुस प्रेरितों 22:3 में कहता है कि मैं तो यहूदी मनुष्य हूं जो किलकिया के तरसुस में जन्मा था, फिर रोमियों 2:11 में उसने कहा था कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता है, अर्थात अपने माता-पिता का विश्वास अपनाने या आज्ञा मानने से किसी को उद्धार नहीं मिलता। पौलुस का सारा परिवार यहूदी था, किन्तु फिर भी वह स्वयं एक मसीही बन गया था। दूसरी बात हमें इस विवरण में यह मिलती है कि किसी बड़े विद्वान या शिक्षक के द्वारा शिक्षा पाने से मनुष्य का उद्धार नहीं होता। प्रेरितों 22:3 में ही पौलुस आगे कहता है परन्तु इस नगर में गमलीएल के पावों के पास बैठकर पढ़ाया गया और बाप दादों की व्यवस्था की ठीक रीति पर सिखाया गया परमेश्वर की व्यवस्था की बातों को उसे सही ढंग से सिखाया गया था। पर तौभी इससे उसका उद्धार नहीं हुआ था। तीसरे स्थान पर हम यहां से यह देखते हैं कि बड़े ही विश्वास के साथ किसी धर्म को मानने से और उसमें पूरी आस्था रखने से भी किसी का उद्धार नहीं हो जाता। क्योंकि प्रेरितों 22:3 में ही पौलुस फिर कहता है कि मैं परमेश्वर के लिये ऐसी धुन लगाए था, जैसे तुम सब आज लगाए हो। पौलुस गलतियों 1:13, 14 में इस प्रकार कहता है, कि मैं परमेश्वर की कलीसिया को बहुत ही सताता और नाश करता था। और अपने बहुत से जातिवालों से जो मेरी अवस्था के थे यहूदी मत में बढ़ता जाता था और अपने बाप-दादों के व्यवहारों में बहुत ही उत्तेजित था। यहां देखने की बात यह है, कि पौलुस जिन बातों को पहले सही और सच समझता था उसका ऐसे समझने में वे बातें वास्तव में सच नहीं बन गई। यद्यपि वह अपने आप में ईमानदार था, एक अच्छा विश्वासी था, और अच्छा विवेक रखता था किन्तु तौभी वह पाप में खोया हुआ था। और जब वह दमिशक की और जा रहा था और प्रभु ने उसे अंधा कर दिया था तो प्रेरितों 22:10 में लिखा है कि उसने पूछा कि हे प्रभु मैं क्या करूं? अब यहां हम देखते हैं कि पौलुस प्रभु में विश्वास ले आया था। पर अभी

भी उसे कुछ और करना था। और हम पढ़ते हैं, प्रेरितों 22:10 में कि प्रभु ने उससे कहा कि उठकर दमिशक में जा, और जो कुछ तेरे करने के लिये ठहराया गया है वहां तुझ से सब कह दिया जाएगा। पौलुस अब यीशु में विश्वास ले आया था और प्रेरितों 6:9 के अनुसार तीन दिन तक वह बिना खाए पीए दमिश्क में रहा था, अर्थात अपने पापों के प्रति उसे शोक था। परन्तु इन सब बातों के बाद भी प्रेरितों 22:16 में लिखा है, कि प्रभु की आज्ञा पाकर हनन्याह नाम का एक प्रचारक पौलुस के पास आया और उसने उससे यूं कहा कि अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।

क्या आप ने भी अपने पापों से उद्धार पाने के लिये ऐसा ही किया है जैसा कि पौलुस ने किया था? प्रभु की योजना सबके लिये केवल एक ही है।

एक मसीही कैसा दिखाई देता है?

डेविड रोपर

एक छोटे लड़के ने बाइबल क्लासों तथा सरमनों में 'मसीही' शब्द का इस्तेमाल हो कई बार सुना था, परन्तु उसे यह पता नहीं था कि इसका अर्थ क्या है। एक दिन उसने अपने पिता से पूछा, डैडी, मसीही होने का क्या मतलब होता है? उसके पिता ने उसे बताया कि मसीही वह होता है, जिसका संबंध मसीह से हो और फिर उसे समझाया कि मसीही कैसे बना जाता है। लड़का अभी भी उलझन में था, सो पिता ने कहा, मसीही व्यक्ति का जीवन एक विशेष प्रकार से होना आवश्यक है। मैं रोमियों 12 का अध्ययन कर रहा हूं और यह अध्याय इस बात की बड़ी अच्छी समीक्षा है कि अलग-अलग परिस्थितियों में एक मसीही को कैसे कार्य करना चाहिए। पिता ने रोमियों 12:9-16 पर लिखे अपने नोटस उठाए और पढ़ने लगा, मसीही व्यक्ति स्नेही, निस्वार्थ, जोशीला, दृढ़, सहायक, अनुग्रहकारी, सहानुभूति रखने वाला और दीन होता है। लड़के ने अपने पिता की बातों पर विचार करते हुए फिर पूछा, क्या मैंने कभी उसे देखा है?

रोमियों 12:2 में पौलुस ने हर मसीही से परिवर्तित जीवन जीने का आग्रह किया है। 9 से 16 आयतों में उसने परिवर्तित जीवन के उदाहरण दिए कि मसीही व्यक्ति कैसा दिखाई देता है। पौलुस की सूची में कुछ नया नहीं है। उसके पाठकों ने पहले भी ऐसी शिक्षा सुन रखी होगी, परन्तु पौलुस उन्हें समझाना चाहता था कि ऐसा जीवन विश्वास से धर्मी ठहराए जाने का स्वाभाविक प्रमाण होना आवश्यक है।

पौलुस के निर्देश आज भी उतने ही उपयोगी हैं जितने पहली सदी में थे। आर. सी. बेल्ल ने लिखा है, हमारी समस्या समझ की नहीं है, बल्कि इस वचन की बातों को मानने की है। हम में से हर किसी को पूछना चाहिए, लोग मुझे तो जानते हैं परन्तु क्या उन्होंने मुझमें कभी मसीह को देखा है?

मसीही व्यक्ति अनुग्रहकारी होता है

अपनी सेवकाई के दौरान यीशु ने अपने पीछे चलने वालों से संसार के व्यवहार के बारे में कुछ चौंकाने वाली बातें कहीं थीं। उसने अपने चेलों को बताया था कि लोग

तुम्हारी निंदा करेंगे, और सताएंगे और झूठ बोल-बोल कर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बातें कहेंगे (मत्ती 5:11)। फिर, उसने कहा कि लोग तुम से बैर करेंगे, और तुम्हें निकाल देंगे, और तुम्हारी निंदा करेंगे, और तुम्हारा नाम बुरा जानकर काट देंगे" (लूका 6:22) मसीही व्यक्ति जब अपने आप को ऐसी परिस्थिति में पाता है तो वह कैसा लगता है? पौलुस ने कहा था कि परमेश्वर के किसी बालक के साथ ऐसा व्यवहार होने पर उसे अनुग्रहकारी ही होना चाहिए, अपने सताने वालों को आशीष दो, आशीष दो, श्राप न दो (रोमियों 12:14)।

मसीही व्यक्ति सहानुभूति करने वाला होता है (12:15)

मसीह के अनुयायी की एक और विशेषता यह है कि वह सहानुभूति करने वाला होगा। पौलुस ने लिखा, आनन्द करने वालों के साथ आनन्द करो, और रोने वालों के साथ रोओ (रोमियों 12:15)। इस शिक्षा की साथी मसीही लोगों के साथ हमारे संबंध में विशेष प्रासंगिकता है। रोमियों 12 अध्याय के पहले भाग में पौलुस ने जोर दिया कि हम एक (आत्मिक) देह (कलीसिया) में बहुत से अंग हैं, आपस में एक-दूसरे के अंग है (आयतें 4, 5)। कुरिन्थुस के लोगों को लिखते हुए, उसने कहा कि, यदि (देह का) एक अंग दु:ख पाता है, तो सब अंग उसके साथ दु:ख पाते हैं; और यदि एक अंग की बड़ाई होती है, तो उसके साथ सब अंग आनन्द मनाते है (1 कुरिन्थियों 12:26)। जन्म, विवाह तथा मृत्यु जैसी जीवन की उन घटनाओं में भाग लेकर हम एक-दूसरे के निकट आते हैं जिसमें एक-दूसरे की खुशी और आंसू बांट लेते हैं।

मसीही व्यक्ति दीन होता है

रोमियों 12 अध्याय की आयत 16 में पौलुस ने उन्हें सम्बोधित किया जो अपने आपको दूसरों से इसलिए बेहतर मानते थे कि उनके पास अधिक सम्पत्ति या शक्ति थी, क्योंकि उनमें दूसरों से अधिक गुण या पढ़ाई थी, या कई और भी कारण हो सकते हैं। हम भी इस वचन को उन पर लागू कर सकते हैं जो कलीसिया के अन्य लोगों से अपने को इसलिए ऊंचा समझते हैं क्योंकि वे पुराने मसीही हैं, उन्हें बाइबल का अधिक ज्ञान हैं, कलीसिया के काम में अधिक सक्रिय हैं, उनके जीवन अधिक धार्मिक हैं इत्यादि।

व्यवहार: पौलुस ने आरंभ किया, आपस में एक-सा मन रखो (रोमियों 12:16क)। एक और जगह एक सा मन रखने की चुनौती का अर्थ अपने विश्वास और शिक्षा में एक होना बताया गया है (1 कुरिन्थियों 1:10)। यहां इसका अर्थ यह लगता है कि हर किसी के साथ एक-सा व्यवहार करो, हर किसी के साथ सम्मान से और करूणापूर्वक व्यवहार करो।

संगति अभिमानी न हो, परन्तु दीनों के साथ संगति रखो; अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न हो (रोमियों 12:16ख)। पौलुस के समय में भी धार्मिक कट्टरता वैसे ही थी, जैसे आज पाई जाती है। याकूब ने दिखाया था कि किस प्रकार से कलीसिया की सभाओं में भी धनवानों और निर्धनों के साथ अलग-अलग व्यवहार किया जाता है (देखें याकूब 2:1-9)।

मैले-कुचैले, फटे-पुराने कपड़े पहने किसी निर्धन के समृद्ध कलीसिया की आराधना सभा में चले जाने की कहानी बताई गई है। वह किसी महिला के पास बैठ

गया, जिसके कपड़े और गहने उसकी सम्पत्ति का विज्ञापन कर रहे थे। महिला जितना हो सका, उस व्यक्ति से दूर हट गई। जब एक सेवक या डिकन उसके पास आया तो उसने जोर से उसके कानों में कहा, क्या तुम्हें भी वैसी गंध आ रही है जैसी मुझे आ रही है? सेवक ने हवा में सांस लेते हुए फिर कहा, हां मुझे लगता है कि यह अकड़ की बदबू है। मसीहियत बहुत बड़ी समानता के विषय में बताती है (गलातियों 3:28)। मसीही धर्म वर्ग-भेदों या जाति-प्रथा को नहीं मानता।

पौलुस के समय की परिस्थिति में आप आएं, तो अधिकतर मण्डलियों में निर्धन सदस्यों का प्रतिशत अधिक होगा (1 कुरिन्थियों 1:26-28)। इसके अलावा मालिक और गुलाम दोनों ही मसीही बनते थे (देखें इफिसियों 6:5-9)। क्या आप पहली बार मालिक और उसके गुलाम की आराधना सभा में एक-दूसरे के पास बैठकर इक्ट्ठे प्रभु-भोज में भाग लेने पर दोनों के भावनात्मक परिवर्तन के अनुभव की कल्पना कर सकते हैं? मसीही लोगों के रूप में हर किसी के साथ कार्य करने में परमेश्वर हमारी सहायता करे। लगभग हर मण्डली में कम से कम एक व्यक्ति तो होता ही है जिसे लगता है कि जैसे वह उसका न हो, या पीड़ादायक ढंग से लजाता है, उनके पास जाता है, उनकी सहायता करता है, और अपनी स्वीकृति और प्रेम को व्यक्त करता है।

ताड़ना: पौलुस ने रोमियों 12:16 की इस ताड़ना को समाप्त किया, अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न हो (आयत 16ग; देखें नीतिवचन 3:7)। क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो इस प्रकार काम करता हो, जैसे उसे सब कुछ पता हो? विषय चाहे जो भी हो, वह सब को यह विश्वास दिलाने की कोशिश करता है कि उस विषय पर उसकी पकड़ है। हम आमतौर पर ऐसे लोगों से दूर रहने की कोशिश करते हैं। लियोजन मौरिस ने लिखा है, अपनी नजर में समझदार व्यक्ति दूसरों की नजर में बहुत कम समझदार होता है। परन्तु पौलुस का उद्देश्य हमारे लिए दूसरों पर उंगली उठाना नहीं, बल्कि अपनी परख करना है। बाइबल के अर्थ में बुद्धि की बात करें या स्पष्ट सामान्य ज्ञान के अर्थ में, हम जो सचमुच में बुद्धिमान होते हैं, उन्हें इस बात का पता होता है कि बहुत सी बातें हैं जो उन्हें पता नहीं हैं और कई बातों की उन्हें समझ नहीं है।

मसीही व्यक्ति कैसा दिखाई देता है? वह दीन होता है। अन्य मसीही लोगों के साथ व्यवहार कर रहा हो या संसार के दूसरे लोगों के साथ, वह हर किसी का आदर करता है और उसे स्वीकार करता है और कभी भी यह प्रभाव छोड़ने की कोशिश नहीं करता कि वह दूसरे किसी व्यक्ति से बेहतर है। जॉन आर.डब्ल्यू स्टॉट ने कहा है, घमण्ड की कुछ किस्में बहुत बुरी होती है। शायद मुझे इसमें एक नकारने वाली बात जोड़ देनी चाहिए। ग्रहण करने का अर्थ स्वीकृति नहीं है। हम दूसरों को उनके विश्वासों तथा जीवन शैलियों को स्वीकार किए बिना उनका आदर कर सकते हैं। यीशु पापियों का मित्र था (मत्ती 11:19), परन्तु उन्हें उसकी चुनौती रहती थी, फिर पाप न करना (यूहन्ना 8:11)।

पौलुस ने विशेष रूप से उन लोगों की बात की थी, जिन्हें हम उच्च वर्ग के कह सकते हैं। परन्तु मेरा अनुभव यह रहा है कि रोमियों 12:16 का संदेश सब लोगों की आवश्यकता है, चाहे वे जीवन के किसी भी स्थान पर क्यों न हो। मैंने उन्हें जिनके पास कम पैसे होते हैं उनसे मायूस होने की बात सुनी है जिनके पास धन होता हैं मैंने

कम पढ़े लिखों को बड़ी-बड़ी डिग्रियों वाले लोगों का मजाक उड़ाते सुना है। मन के अन्दर यह सोचने की इच्छा है कि हम किसी कारण दूसरों से बेहतर हैं। जहां हम रहते हैं उस माहौल के कारण, हमारी त्वचा के रंग के कारण, राजनैतिक संबंधों के कारण, आप इसमें और जोड़ सकते हैं। मसीही व्यक्ति के लिए ऐसी बातों का कोई महत्व नहीं है। वह सब लोगों से प्रेम करता है और वह विनम्र है।

जी उठने के गवाह

स्टीव विलियम्स

इसी यीशु को परमेश्वर ने जिलाया, जिसके हम सब गवाह हैं (प्रेरितों 2:32)।

सी.टी. क्रेग ने एक बार कहा था, आरंभिक मसीही मसीह पर इस कारण विश्वास नहीं करते थे कि उन्हें उसकी लाश नहीं मिली थी, बल्कि वे इस कारण विश्वास करते थे क्योंकि उन्होंने जीवित मसीह को देखा था (द बिगिनिंग ऑफ क्रिश्चियनिटी 1943, एफ. एफ. ब्रूस, द सप्रैडिंग फलेम, पृ. 62 में उद्धृत)। खाली कब्र में कफन का लिबास पड़ा होना ही कुछ चेलों के विश्वास के लिए काफी था। औरों ने तब विश्वास किया जब उन्होंने यीशु को अपनी आंखों से देखा। यीशु के जी उठने के संबंध में बताने के लिए खाली कब्र एक तर्क है, परन्तु यही एक प्रमाण नहीं है।

कहते हैं कि देखने से विश्वास आता है। कुछ लोगों के लिए यीशु को जीवित देखना उसके जी उठने पर विश्वास करना था। उदाहरण के लिए मरियम मगदलीनी ने पहले यीशु को पहचाना नहीं था। उसने बाग में एक आदमी को देखा और उसे लगा कि वह कोई माली है। वह उससे यीशु की लाश के बारे में पूछने लगी। और जब यीशु ने आवाज दी, मरियम। तो उसने पहचान लिया।

मरियम। यीशु को केवल एक ही शब्द बोलने की आवश्यकता थी। गम में डूबी महिला को आनन्द के सागर में डुबोने के लिए। वह सोच रही थी कि वह माली है। परन्तु अब उसने उत्तर में कहा, हे रब्बोनी।

यीशु की आवाज में मरियम का नाम, इतना ही काफी था। उसने यह नहीं पूछा, प्रभु क्या आप यीशु ही हो? चेले डरे और घबराए हुए, अपने आपको तालाबंद दरवाजों में छिपाते फिरते थे। अचानक यीशु वहां पर प्रकट हो गया। थोमा उनके साथ नहीं था। बाद में जब वह आया तो उन्होंने उसे बताया पर उसने उनकी गवाही पर विश्वास नहीं किया। आठ दिन बाद इसी स्थिति में यीशु फिर उन पर प्रकट हुआ। इस बार थोमा वही था। इस बार जब थोमा ने यीशु को देखा, तो यीशु के घाव देखकर उसे विश्वास हो गया। वह पुकार उठा, हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर। यीशु ने कहा, तू ने मुझे देखा है, क्या इसलिए विश्वास किया? धन्य हैं वे जिन्होंने बिना देखे विश्वास किया (यूहन्ना 20:28, 29)।

बेशक यीशु के जी उठने की गवाहियां इतनी ही नहीं है। पौलुस उन बहुत सी गवाहियों के बारे में बताता है जिन्होंने यीशु को जी उठे देखा था, ...और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा। और कैफा को तब बारहों को दिखाई दिया। फिर पांच सौ से अधिक भाइयों को एक साथ दिखाई दिया, जिनमें से बहुतेरे अब तक वर्तमान हैं,

पर कितने सो गए। फिर याकूब को दिखाई दिया। तब सब प्रेरितों को दिखाई दिया। और सब के बाद मुझ को भी दिखाई दिया, जो मानो अधूरे दिनों का जनमा हूं (1 कुरिन्थियों 15:4-8)।

इन तथ्यों से पता चलता है कि इतनी गवाहियां यह दिखाती हैं कि यीशु का जी उठना कोई स्वप्न नहीं था। पांच सौ लोगों को एक ही बार में एक ही स्वप्न नहीं आता या उन्हें धोखा नहीं होता। इस बात पर भी ध्यान दें, जिनमें से बहुतेरे अब तक वर्तमान है। इन आयतों के बीच यह क्यों जोड़ा गया। पौलुस के कहने का अभिप्राय है कि यदि उसके पाठकों को विश्वास नहीं है तो वे उन से पूछ सकते हैं जो उन पांच सौ में से अब भी जीवित हैं जिन्होंने यीशु को जी उठे देखा था। यीशु मसीह के मुर्दों में से जी उठने की पौलुस की गवाही को बहुत से जिम्मेदार गवाहों की ओर से पुष्टि मिली थी जो पौलुस की शिक्षा को पक्का करती थी।

पुराने नियम में किसी बात को साबित करने के लिए केवल दो या तीन गवाह भी काफी होते थे। यीशु मसीह के जी उठने को पांच सौ से अधिक गवाहों ने साबित किया है।

मसीह के जी उठने का एक बहुत बड़ा गवाह, कुरिन्थियों के नाम पत्र का लेखक पौलुस है जो पहले तरसुसवासी शाऊल कहलाता था। माना जाता है कि कुछ गवाह यीशु के पक्षधर थे क्योंकि वे पहले से यीशु के चेले थे। परन्तु पौलुस तो मसीहियत का बहुत बड़ा विरोधी था। पहले मसीही शहीद स्तिफनुस की हत्या किए जाने के समय वह वहीं पर था। वह स्तिफनुस के हत्यारों के कपड़ों की संभाल स्वेच्छा से कर रहा था। जिस समय उसने यीशु को जीवित देखा, तब वह मसीही लोगों को पकड़ने के लिए ही जा रहा था। जब इतना बड़ा विरोधी बदलकर गवाह बन जाता है तो हमें चाहिए कि उसकी गवाही को गंभीरता से लें।

यीशु मसीह का जी उठना इतिहास की बातों की बहस करने के लिए कोई तकनीकी मुद्दा नहीं है। हमें पाप से छुटकारा दिलाने के लिए इसका बहुत अधिक महत्व है। पौलुस ने कहा कि उद्धार पाने के लिए हमें यीशु मसीह के जी उठने पर विश्वास लाना आवश्यक है। यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा। क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिए मुंह से अंगीकार किया जाता है (रोमियों 10:9, 10)।

हमारे लिए यीशु के जी उठने पर विश्वास करना ही काफी नहीं है बल्कि आज्ञापालन दिखाना भी आवश्यक है जो यीशु के जी उठने के संकेत और उसके प्रभाव के साथ जुड़ा हुआ है। जब हम पानी में (बपतिस्मे के लिए) गाड़े जाते हैं तो हम यीशु की मृत्यु और उसके गाड़े जाने का अनुसरण कर रहे होते हैं। जब हम बपतिस्मे के पानी में से बाहर आते हैं तो हम यीशु के कब्र में से जी उठने का अनुसरण कर रहे होते है। पौलुस समझाता है, क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उस की मृत्यु का बपतिस्मा लिया? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की

समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे (रोमियों 6:3-5)।

यदि आप यह मानते हैं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है और यह कि क्रूस पर अपनी मृत्यु के बाद मुर्दों में से जी उठा, तो आपके लिए अपने इस विश्वास को पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में बपतिस्मा लेकर (यानि दफन होकर) व्यवहार में लाना आवश्यक है। यदि आप ऐसा करते हैं तो बिल्कुल वैसे ही जैसे मसीह मुर्दों में से जी उठा, आप भी पाप की मृत्यु में से जी उठे हैं। आपको एक नया आत्मिक जीवन दिया जाएगा, क्योंकि परमेश्वर की ओर से आपके पाप क्षमा कर दिए जाएंगे। आपका विवेक शुद्ध हो जाएगा। आप नया जीवन आरंभ कर सकते हैं। यह सब यीशु के मुर्दों में से जी उठने के कारण ही संभव हो पाया है।

घर में संयम (गलातियों 5:22, 23)

कोय रोपर

जिस घर में आत्मा का वास हो, वह एक खुशहाल और सफल घर होता है। यह सफल है क्योंकि घर के लोग आत्मा का फल लाते हैं। इस शृंखला में हम ने यह ध्यान दिलाते हुए कि आत्मा के फल की विभिन्न खूबियां घर से कैसे जुड़ी हैं, उस सच्चाई को दिखाने को कोशिश की है। यह पाठ आत्मा के फल के नौंवे और अंतिम पहलू, संयम पर है।

संयम का अर्थ

संयम क्या है? पहले तो हमें यह ध्यान देना चाहिए कि यह क्या नहीं है।

संयम क्या नहीं है

मसीही लोगों के रूप में हमारे लिए संयम बरतते हुए क्रोध या रोष को सदा के लिए बोतल में बंद करना आवश्यक है पर इसके लिए यह आवश्यक है कि हम नकारात्मक भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए कोई सही स्थान ढूढें। उदाहरण के लिए सयम के इस्तेमाल में संयम रखना हमें किसी भी बात से बिना पूर्व योजना और तैयारी के अपने आप करने में कभी रोकता नहीं। वास्तव में कोई बात अपने आप हो जाने का विचार भी यह सुझाव देता है कि आमतौर पर हम समयसारिणी के अनुसार काम करते हैं। समय के इस्तेमाल में संयमी होने के लिए आवश्यक है कि हम अपना समय योजना के अनुसार सिखाएं। फिर संयम बरतते समय हम कभी-कभी, बिना योजना के या अपने आप हो जाने वाली किसी बात का आनन्द ले सकते हैं।

संयम क्या है?

तो फिर हम संयम के गुण को कैसे समझें? अनुवादित शब्द संयम का अनुवाद परहेज हुआ है। परन्तु डब्ल्यू.ई. वाइन ने कहा है, "संयम प्राथमिकता दिया जाने वाला अनुवाद है, क्योंकि परहेज अब संयम के एक रूप तक सीमित (शराब से परहेज), मनुष्य को परमेश्वर द्वारा दी गई विभिन्न शक्तियों का दुरूपयोग हो सकता है; सही इस्तेमाल परमेश्वर के आत्मा के संचालन में इच्छा को चलाने वाली शक्ति की मांग करता है।"

यह शब्द किसी की भावनाओं, आवेगों या इच्छाओं को रोकने के लिए है।

शायद यह महत्वपूर्ण है कि पौलुस ने संयम को अपनी सूची में सबसे नीचे रखा, बिल्कुल वैसे ही जैसे यह महत्वपूर्ण था कि उसने प्रेम पहले रखा। प्रेम अगली खूबियों को संक्षिप्त कर देता है,

जबकि संयम अन्य गुणों की प्राप्ति की कुंजी देता है। उदाहरण के लिए मसीही व्यक्ति एक भला, कृपालु, प्रेम करने वाला, विश्वासी, नम्र, धीरजवंत या सहनशील कैसे हो सकता है? केवल संयम के द्वारा सामान्य, स्वाभाविक अर्थात शारीरिक प्रवृत्ति के अधीन होने, कठोर होने, क्रोध रखने या बदला लेने की इच्छा करने और कामुक प्रलोभन में पड़ने की होती है। केवल संयम बढ़ाकर ही हम संसारके व्यवहारों को न और आत्मिकता के गुणों को 'हां' कह सकते है।

संयम की आवश्यकता

मसीही व्यक्ति के संयमी होने का समाज में पाई जाने वाली संयम की कमी से पता चलता है। यह और जहां मसीह ने संयम और अपना इंकार का प्रचार किया (मत्ती 16:24) वहां आज के समाज में असंयम पाया जाता है। उदाहरण के लिए अमेरिका में 1946 और 1965 के बीच जन्म लेने वाले लोगों को संयम की आवश्यकता है। अर्थात इन्हें मैं वाली पीढ़ी कहा जाता है। यदि वे अकेले में नहीं तो वे मुख्यतया मैं या अपने आप में दिलचस्पी लेते प्रतीत होते हैं। स्व-कामुकता आत्मा रहित अर्थात अपने आप से या अपनी आकृति से प्रेम होना प्रचलित था। स्वार्थ रहित और स्व पूर्ति पर नया रूप, जो सुझाव देता था कि प्रत्येक व्यक्ति के संसार का केन्द्र स्व या अपना आप हो। जब वह पीढ़ी खत्म हो गई तो ऐसा लगता नहीं है कि अगली पीढ़ियां अपने आपको प्रसन्न करना बंद कर देती है।

संयम की आवश्यकता विशेष रूप में इसलिए नहीं है कि यह कम हो रहा है बल्कि इसलिए भी हैं क्योंकि मसीही व्यक्ति को संयमी होने की आज्ञा दी गई है। पतरस ने अन्य गुणों के साथ जो मसीही व्यक्ति को अपने विश्वास के साथ जोड़ना आवश्यक है, नैतिक श्रेष्ठता, भक्ति, भाईचारे की दयालुता को रखा (2 पतरस 1:5-7)। पौलुस ने फेलिक्स को सुसमाचार बताते समय संयम की आवश्यकता का प्रचार किया (प्रेरितों 24:25)। झुण्ड के अगुओं और आदर्शों के रूपों और कलीसिया के ऐल्डरों का संयमी होना आवश्यक है (तीतुस 1:8)। पौलुस ने मसीही लोगों के लिए एक उदाहरण देते हुए अपने समय के धावकों द्वारा अपनाए जाने वाले कठोर संयम का हवाला देते हुए संयम की आवश्यकता का संकेत दिया (1 कुरिन्थियों 9:24, 25)। यह कहते हुए कि मैं अपनी देह को मारता कूटता, और वश में लाता हूं, ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके, मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूं (1 कुरिन्थियों 9:27) उसने संयम के उदाहरण के रूप में अपना इस्तेमाल किया।

मसीही लोगों के रूप में हमें संसार के लोगों से अलग होना आवश्यक है। हम अपने आपको तुच्छ नहीं मानते, हम अपना तिरस्कार नहीं करते, वास्तव में हमें मत्ती 22:39 के साथ अपने आप से प्रेम रखना आवश्यक है, हम जानते हैं कि संसार की सबसे महत्वपूर्ण बात वह या अपने आप नहीं है। अपने आपको हमेशा डरना या हठधर्मी होना या प्रसन्न करना नहीं है; कई बार अपना इंकार आवश्यक होता है। अपने आपको सदा संयम में रखना आवश्यक है।

इसी प्रकार से, घर जहां आत्मा वास करता है दूसरे घरों से अलग है क्योंकि संयम मसीही घर की स्पष्ट पहचान है। यह समझने के लिए कि संयम घर को कैसे प्रभावित करता है, दो घरों पर विचार करते हैं-एक वह जिसमें संयम नहीं पाया जाता और दूसरा जिसमें संयम पाया जाता है।

संयम का इस्तेमालः बिना संयम के घर

जिस घर में संयम नहीं है, वहां परिवार के आर्थिक मामले गड़बड़ा जाते हैं। परिवार के लोग बिना जाने की उधार कैसे चुकाएंगे, चीजें उधार लेते रहते हैं। वे पैसे उधार लेकर हो सकता है, उसे चुका न पाएं। उनका कर्ज समय पर चुकाया नहीं जाता। वे भविष्य का नहीं सोचते और पैसा बचा नहीं पाते।

उनके जीवन अव्यवस्थित हैं। वे किसी समयसारिणी के अनुसार चलने की कोशिश नहीं करते। इस कारण आमतौर पर वे काम में लेट हो जाते या किसी से मिलना भूल जाते हैं। जब उन्हें जल्दी

उठना चाहिए, तब वे शायद देर तक सोते हैं। अपनी अव्यवस्थित स्थिति में उन्हें बाइबल पढ़ने, प्रार्थना करने या पारिवारिक आराधना करने का समय नहीं मिल पाता। वे जल्दबाजी में काम करते हैं और बाद में पछताते हैं कि उन्होंने बेकार मेहनत में समय गंवाया।

ऐसे परिवार वाला घर क्योंकि उन्होंने समय सारिणी नहीं बनाई, इस कारण परिवार के लोगों को घर की सफाई का समय नहीं मिलता। इस कारण घर आमतौर पर गंदा रहता है और आवश्यकता पड़ने पर पता नहीं चलता कि कौन सी चीज कहां पड़ी है।

इससे भी महत्वपूर्ण यह तथ्य है कि परिवार के लोग बिना शर्म किए शरीर की भूख मिटाते हैं। यदि खाने के लिए भोजन है तो वे इसे खा जाएंगे। चाहे उसे पता ही हो कि उन्हें इतना नहीं खाना चाहिए पर वे इसे खा जाएंगे। यदि कहीं 'मनोरंजन' की बात होती है तो वे उसका आनन्द लेने को तैयार रहते हैं चाहे उसके लिए उन्हें अगला दिन भी देना पड़े। वे अपने असंयम के परिणामों के लिए बिना विचार किए नशीली चीजें पीने, जुआ खेलने, अवैध नशे लेने, या नाजायज शारीरिक संबंधों में लिप्त होने के प्रलोभनों में फंस सकते हैं।

स्पष्टतया संयम की कमी के ये परिणाम एक जैसा नुकसान नहीं पहुंचाते। उदाहरण के लिए घर का गंदा होना पाप नहीं है, जबकि व्यभिचार करने की परीक्षा में फंसना पाप है। तौभी यह स्पष्ट है कि बिना संयम वाला घर किसी भी मानक से सफल घर नहीं होगा। निश्चित रूप में यह वह घर नहीं होगा जिसमें और जिसके द्वारा परमेश्वर को महिमा मिले।

संयम वाला घर

इसके विपरीत, उस घर की तस्वीर बनाते हैं, जहां आत्मा संयम देता है। इस घर के लोग अपने आर्थिक संसाधनों का इस्तेमाल समझदारी से करते हैं। वे बेकार में कर्ज में पड़ने या अपनी आमदनी से अधिक खर्च करने से बचते हैं। फिजूलखर्ची करने, अच्छी लगने वाली हर चीज को खरीदने, उधार की खरीदारी करने, और फिर उस कर्ज को चुका न पाने के बजाय संयमी परिवार धन कमाने और खर्च करने के संबंध में बाइबल वाले मार्गदर्शन को मानता है। वे धन से प्रेम नहीं रखते या धनवान होने में भी नहीं (1 तीमुथियुस 6:9, 10), परन्तु वे अपने हाथों से ईमानदारी से काम करते हैं ताकि वे जरूरतमंदों के साथ बांटने के योग्य हो सकें (इफिसियों 4:28)। वे जो कमाई करते हैं, उसमें से उदारता से और खुले मन से देते हैं (1 कुरिन्थियों 16:1, 2; 2 कुरिन्थियों 9:7)। इन बातों को करने के लिए वे अपने खर्च को नियंत्रित करते, आवेग में आकर खर्च करने से बचते, अपने पैसे का हिसाब किताब रखते, और भविष्य की योजना बनाते हैं।

जो कुछ उनके पास है उस सब का असली मालिक परमेश्वर है और वे तो केवल उसके जो उनके पास है, भण्डारी हैं, इस कारण परिवार भौतिक संसाधनों से बचता है। परिवार चीजों को दोबारा इस्तेमाल में ला सकता है, न केवल इसलिए कि यह वातावरण के लिए अच्छा है, बल्कि इसलिए भी कि जो कुछ उनके पास है वह सब प्रभु का है। वे पुरानी चीजों की जगह केवल फैशन बदलने के कारण नई चीजों को लाने के प्रलोभन का सामना करते हैं। वे प्रचलन के संसार के दृष्टिकोण से नहीं चलते, बल्कि यह देखते हैं कि वे उसका जो परमेश्वर ने उनके वश में दिया है बेहतरीन इस्तेमाल कैसे कर सकते हैं।

संयमी परिवार समय का सदुपयोग करता है। हमारे संसाधनों में समय शायद सबसे बहुमूल्य है। धन खो जाने पर हम और धन कमा सकते हैं। कार टूट जाने पर उसकी मरम्मत हो सकती है या नहीं मिल सकती है। परन्तु यदि बेकार की बातों में समय को बर्बाद किया गया तो खोया हुआ समय दोबारा कभी नहीं मिल सकता। मसीही लोग जो संयमी है (अपने) अवसर को बहुमोल समझते हैं (इफिसियों 5:16)। उपलब्ध समय का अधिकतम लाभ लेने के लिए अलग-अलग लोगों के लिए अलग-अलग बातें हो सकती है। किसी के लिए यह खेलों में कम समय बिताना हो सकता है। जबकि किसी और के लिए यह टेलीविजन देखने में कम समय लगाना हो सकता है। हर मसीही

परिवार के लिए इसमें (क) कलीसिया की हर सभा में भाग लेने, (ख) बाइबल पढ़ने और लगातार प्रार्थना करने, (ग) दूसरों का भला करने, और (घ) पारिवारिक जिम्मेदारियों को बनाने के लिए समयसारिणी बनाना आवश्यक है। घर जहां संयम दिखाया जाता हैं और परिवार के लोग समयसारिणी के साथ चलते हैं और अपने समय का सदुपयोग करते हैं।

परिवार का हर सदस्य अपने शरीर का ध्यान रखता या रखती है। मसीही होने के नाते हमारी जिम्मेदारी अपने ही शरीरों की देखभाल करना है, यानी जहां तक हो सके स्वस्थ रहना है, उसी अवधारणा से निकला है जिसमें से अपने आर्थिक और भौतिक संसाधनों का सदुपयोग करने की हमारी जिम्मेदारी है। यानी हमारे शरीर परमेश्वर के ही हैं (1 कुरिन्थियों 6:19, 20)। हमें उसके जो परमेश्वर हमें देता है अच्छे भण्डारी होने की जिम्मेदारी है। इसलिए हमें अधिक भोजन करके, नशे लेकर, शराबी होकर या स्मोकिंग करके अपने शरीरों का दुरूपयोग करने का कोई अधिकार नहीं है। इसके अलावा हमारा स्वास्थ्य जहां तक हमारे ऊपर निर्भर है अपने आपको स्वस्थ रखने की जिम्मेदारी हमारी है। इसलिए मसीही व्यक्ति जिसकी पहचान संयमी वाली है, अपने शरीर की देखभाल करता या करती है।

परिवार के लोग परीक्षा का सामना करते हैं। मसीही लोगों के पाप करने के मुख्य कारणों में से एक यह है कि हम उन कामों के परिणामों पर जो हम करने वाले हैं, समय से पहले विचार नहीं करते। शायद किसी जवान के मुंह से बिना सोचे-समझे या बिना जाने कोई शपथ की बात निकल जाती है। कोई स्त्री परिणामों पर विचार करने के लिए रूके बिना अपनी बातों से किसी को आहत करती है। आवेश में आकर दो जन इच्छा के आगे हार मानकर शारीरिक अनैतिकता के दोषी हो सकते हैं। संयम की अवधारणा यह सुझाव देती है कि हम अपने कामों को नियंत्रण में रख सकते हैं, जो यह सुझाव देता है कि हम कुछ करने या बोलने या किसी गतिविधि में संलिप्त होने से पहले सोच लें। पौलुस ने संकेत दिया कि मसीही लोग अपनी शारीरिक इच्छाओं को वश में रखें। 1 थिस्सलुनीकियों 4:3-5 में उसने लिखा-

क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है, कि तुम पवित्र बनो; अर्थात व्यभिचार से बचे रहो। और तुम में से हर एक पवित्रता और आदर के साथ अपने पात्र को प्राप्त करना जाने। और यह काम अभिलाषा से नहीं, और न उन जातियों की नाई, जो परमेश्वर को नहीं जानती।

स्पष्टतया, कोई भी निश्चय कोई भी घर पूरी तरह से ऐसे संयम नहीं रखता, जैसे हम ने बात की है। तौभी मसीही व्यक्ति संसार के लोगों से कहीं अधिक संयमी जीवन बिताता है। आत्मा का फल देने वाले मसीही लोगों से भरा घर दूसरों से अधिक संयमी होने को दिखाता है।

संयम के प्रतिफल

घर में जिसमें आत्मा संयम देता है आशीषित होगा। संयम अव्यवस्था को व्यवस्था में बदल देता है। बिल चुकाए जाते हैं और कर्ज के बोझ तले दबे बिना परिवार के पास आराम से जीने को काफी होता है। परिवार के लोग जो कुछ उनके पास है उससे संतुष्ट होना (इब्रानियों 13:5) सीख लेते हैं और यह नहीं सोचते कि उन्हें संसार के किसी बनावटी मापदण्ड के अनुसार जीवन जीना है। समय का सदुपयोग होता है तो जल्दबाजी में पड़े संसार के बीच शांति और चैन की भावना है।

सबसे बढ़कर परिवार की समयसारिणी का केन्द्र परिवार और उसके काम है। जिस कारण परिवार के लोग शरीर की अभिलाषाओं के आगे हार मानने से इंकार कर देते हैं। वे मसीह के काम को बढ़ाने के लिए जो भी कर सकें, करते है। ऐसा घर जहां आत्मा संयम का फल देता है, सफल ही है। यह टिका रहेगा, परिवार के लोग खुशहाली और संतुष्टि पाएंगे और उस घर से मसीह की रोशनी सारे संसार में चमकेगी।